

चांदनी छाई (५९)

जन्म की शुभ घड़ी आई मुबारक हो मुबारक हो।

वरी घर घर में वाधाई मुबारक हो मुबारक हो॥

महक उठा मण्डल सारा कियो देवों ने जै कारा

जगत में चान्दनी छाई—मुबारक हो॥

मैया ने लाड़ से पाला साई का बख्त है बाला

ठरी पई दौलता दाई—मुबारक हो॥

पिता जो पुत्रु हो भारी फली फूली भक्ति सारी

कथा की कोकिला आई॥

मिली सभु मीरपुर नारियूं खणी हथनि में मंगल थारियूं

वाधाई सबनि मिल गई॥

द्रिसी साई अ जो चन्द्र मुखड़ो मिटी वियो दर्द दुखड़ो

भक्ति सबनि जी मन भाई॥

ततल दिलियूं ठरी पयड़ियूं विछोड़े जूं घड़ियूं वयड़ियूं

अंडण आशीश झर लाई॥

प्रेम जो पाठड़ो पाढ़े जीवनि खे चिकणि मां चाढ़े

जपायो श्री राम रघुराई॥

अखण्डा नन्द सां करे यारी उड़िया बाबा सां प्रीति पाड़ी
हरी बाबा भी हर्षाई॥

गायो श्री मैगसि मंगलाचार बुधी खुशि थिये अवध
सरकार

कृपा जी कोर वर्षाई॥